

RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE

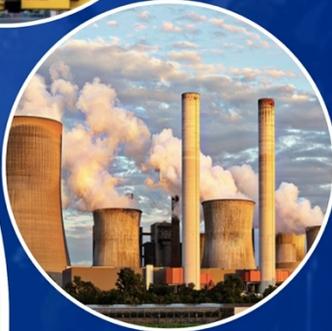
अक्टूबर

27 & 28

2024

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors
13. Index



By Ankit Avasthi Sir

विश्व दूरसंचार मानकीकरण सभा 2024 / World Telecommunication Standardization Assembly 2024

हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ द्वारा आयोजित विश्व दूरसंचार मानकीकरण सभा (ITU-WTSA 2024) नई दिल्ली में संपन्न हुई। इस सभा में वैश्विक दूरसंचार के विकास, मानकीकरण और नवाचार पर महत्वपूर्ण चर्चाएँ की गईं।

कार्यक्रम की मुख्य बातें:

- भारत 6जी गठबंधन:**
 - अंतर्राष्ट्रीय हितधारकों के साथ महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए।
 - भारत ने वैश्विक 6जी पेटेंट में 10% योगदान देने का वादा किया, जो इसके तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण कदम है।
- शैक्षणिक सहभागिता:**
 - 15वें आईटीयू केलिडोस्कोप सम्मेलन में रिकॉर्ड संख्या में शोधपत्र प्रस्तुत किए गए।
 - यह डिजिटल अवसंरचना के भविष्य में वैश्विक रुचि को दर्शाता है।
- लैंगिक संतुलन को बढ़ावा देना:**
 - इस कार्यक्रम में अभूतपूर्व महिला भागीदारी का जश्न मनाया गया।
 - जिनेवा के बाहर आयोजित डब्ल्यूटीएसए में महिलाओं की भागीदारी 26% रही, जबकि जिनेवा 2022 में यह 32% थी।

केलिडोस्कोप 2024 सम्मेलन:

- महत्व:** 15वां केलिडोस्कोप अकादमिक सम्मेलन डिजिटल परिवर्तन और दूरसंचार में नवाचार और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में उभरा।
- आयोजन:** यह सम्मेलन ITU द्वारा आयोजित किया जाता है और 5G, AI, IoT, क्वांटम संचार और अन्य परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकियों पर चर्चा के लिए शिक्षा, उद्योग और सरकार के प्रतिभाशाली दिमागों को एक साथ लाता है।
- थीम:** "एक स्थायी दुनिया के लिए नवाचार और डिजिटल परिवर्तन।"

ITU-WTSA 2024 में अपनाए गए संकल्प:

- भारत द्वारा प्रमुख प्रस्ताव:**
 - डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना पर मानकीकरण गतिविधियों को बढ़ाने का नया प्रस्ताव।
 - दूरसंचार/सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के समर्थन में एआई प्रौद्योगिकियों पर ITU दूरसंचार मानकीकरण क्षेत्र की मानकीकरण गतिविधियों पर नया संकल्प।
- अन्य नए आईटीयू-टी संकल्प:**
 - टिकाऊ डिजिटल परिवर्तन पर मानकीकरण गतिविधियों को बढ़ाना।
 - मेटावर्स मानकीकरण को बढ़ावा देना और मजबूत करना।
 - वाहन संचार के लिए मानकीकरण गतिविधियों को बढ़ावा देना और मजबूत करना।

निष्कर्ष: ITU-WTSA 2024 ने डिजिटल अवसंरचना, 6जी तकनीक, और लैंगिक समानता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया, जो भविष्य की दूरसंचार तकनीक और मानकीकरण के विकास में सहायक होंगे। यह सभा वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देने और नवाचार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाने का एक मंच प्रदान करती है।

WTSA क्या है?

विश्व दूरसंचार मानकीकरण सभा (WTSA)

अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (ITU) के मानकीकरण कार्य के लिए एक शासी सम्मेलन है, जो हर चार वर्ष में आयोजित किया जाता है। यह सभा तकनीकी मानकों, नीतियों और प्रक्रियाओं को विकसित करने के लिए एक मंच प्रदान करती है, ताकि वैश्विक दूरसंचार और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के विकास में सहयोग बढ़ाया जा सके।

प्रमुख बातें:

- भारत में पहली बार आयोजन:** यह पहली बार है कि ITU-WTSA का आयोजन भारत और एशिया-प्रशांत क्षेत्र में किया गया है।
- प्रतिनिधित्व:** इस सम्मेलन में 190 से अधिक देशों के 3,000 से अधिक उद्योग जगत के नेता, नीति-निर्माता और तकनीकी विशेषज्ञ एक साथ आए हैं, जो दूरसंचार, डिजिटल और ICT क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (ITU):

- संस्थापक वर्ष:** ITU की स्थापना 1865 में की गई थी।
- उद्देश्य:** यह सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के लिए संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसी है, जिसका मुख्य उद्देश्य संचार नेटवर्क में अंतर्राष्ट्रीय संपर्क को सुविधाजनक बनाना है।
- कार्य:**
 - ITU वैश्विक रेडियो स्पेक्ट्रम और उपग्रह कक्षाओं का आवंटन करता है।
 - यह तकनीकी मानकों का विकास करता है, जिससे नेटवर्क और प्रौद्योगिकियां आपस में निर्बाध रूप से जुड़ सकें।
 - ITU वंचित समुदायों तक ICT की पहुँच में सुधार के प्रयास भी करता है।



परमाणु ऊर्जा का बढ़ता महत्व / The growing importance of nuclear energy

हाल ही में, गूगल ने कई छोटे मॉड्यूलर रिएक्टरों (SMR) से परमाणु ऊर्जा खरीदने के लिए 'पहले कॉर्पोरेट समझौते' की घोषणा की है। यह समझौता परमाणु ऊर्जा की बढ़ती मांग और इसके नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के साथ सम्मिलन के महत्व को दर्शाता है।

छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर (SMR) के बारे में:

छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर (SMR) परमाणु रिएक्टरों की एक नई श्रेणी हैं-

- **संघनन और सुरक्षा:** SMR की संरचना और डिजाइन में सुरक्षा विशेषताएँ बेहतर होती हैं, जो उन्हें पारंपरिक परमाणु ऊर्जा रिएक्टरों की तुलना में अधिक सुरक्षित बनाती हैं।
- **बिजली उत्पादन:** इनकी विद्युत उत्पादन क्षमता 300 मेगावाट प्रति इकाई तक होती है, जो पारंपरागत परमाणु ऊर्जा रिएक्टरों की उत्पादन क्षमता का लगभग एक तिहाई है।
- **स्थानांतरण और स्थापना:** SMR का आकार छोटा होने के कारण इन्हें किसी कारखाने में तैयार किया जा सकता है और फिर संयंत्र स्थान पर कई इकाइयों को एक साथ स्थापित और संचालित किया जा सकता है।



SMR के प्रकार: SMR विभिन्न आकार, डिजाइन सुविधाएँ और शीतलन प्रकारों में भिन्न हो सकते हैं।

1. **दबावयुक्त जल संयंत्र:** यह पारंपरिक पानी के दबाव में संचालित होते हैं, जो रिएक्टर को सुरक्षित और प्रभावी बनाते हैं।
2. **तरल नमक आधारित संयंत्र:** यह रिएक्टर उच्च तापमान के लिए तरल नमक का उपयोग करते हैं, जो ऊर्जा संचयन में सहायक होते हैं।
3. **उच्च तापमान वाले गैस संयंत्र:** ये गैसों का उपयोग करते हैं, जिससे ऊर्जा उत्पादन की क्षमता बढ़ती है।
4. **तरल धातु शीतलक संयंत्र:** ये रिएक्टर तरल धातुओं को शीतलन के रूप में उपयोग करते हैं, जो बेहतर थर्मल प्रबंधन में मदद करते हैं।
5. **गोस अवस्था या रुग्ना पाइप संयंत्र:** ये रिएक्टर अधिकतम तापीय दक्षता के लिए विशेष डिजाइन में होते हैं।

क्या परमाणु ऊर्जा वास्तव में स्वच्छ है?

हालांकि बड़ी तकनीकी कंपनियों परमाणु ऊर्जा के उपयोग की दिशा में आगे बढ़ रही हैं, लेकिन इसकी स्वच्छता के संबंध में अभी भी कई प्रश्न उठते हैं। कई पर्यावरण समूह इस पर सक्रिय रूप से विरोध कर रहे हैं और इसे "स्वच्छ ऊर्जा" के रूप में प्रस्तुत करने के तरीकों की आलोचना कर रहे हैं।

पर्यावरणीय समूहों के अनुसार, परमाणु ऊर्जा से जुड़ी पूर्व की दुर्घटनाओं और संकटों की यादें आज भी लोगों के मन में हैं, जैसे:

- **चेर्नोबिल विस्फोट (1986):** इस दुर्घटना के परिणामस्वरूप व्यापक पर्यावरणीय विनाश हुआ, जिसका प्रभाव अब भी महसूस किया जाता है।
- **फुकुशिमा दुर्घटना (2011):** यह भी एक महत्वपूर्ण घटना है जिसने परमाणु ऊर्जा के खतरे को उजागर किया।
- **श्री माइल आइलैंड दुर्घटना (1979):** इसके परिणामस्वरूप रेडियोधर्मी गैसों का उत्सर्जन हुआ, जिससे मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

बड़ी तकनीकी कंपनियों द्वारा परमाणु ऊर्जा उपयोग की आवश्यकता

1. गूगल

- गूगल ने हाल ही में अपनी **पर्यावरण रिपोर्ट 2024** में उल्लेख किया है कि उसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) मॉडलों को प्रशिक्षित करने और डाटा केंद्रों के संचालन के लिए ऊर्जा की अत्यधिक आवश्यकता होती है।
- रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि वर्ष 2023 में उसके कुल वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में साल-दर-साल 13% की वृद्धि हुई है।

2. माइक्रोसॉफ्ट

- माइक्रोसॉफ्ट ने **क्रेन क्लीन एनर्जी सेंटर (CCEC)** को लॉन्च करने के लिए कॉन्स्टेलेशन के साथ 20 साल के बिजली खरीद समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।
- इस समझौते का उद्देश्य श्री माइल आइलैंड यूनिट 1 को फिर से शुरू करना है।

3. अमेज़न

- अमेज़न ने हाल ही में घोषणा की है कि उसने **परमाणु ऊर्जा परियोजनाओं** के निर्माण का समर्थन करने के लिए तीन नए समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं।

4. ओपनAI

- ओपनAI के सीईओ **सैम ऑल्टमैन** ने परमाणु स्टार्टअप **ओव्लो** का समर्थन किया है, जिसका लक्ष्य इटाहो में वर्ष 2027 तक एक वाणिज्यिक माइक्रोरिएक्टर का संचालन करना है।
- इसके अलावा, ऑल्टमैन ने वर्ष 2021 में परमाणु संलयन कंपनी **हेलियन** में भी निवेश किया है, जो नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी है।



बिहार का पहला ड्राई पोर्ट / Bihar's first dry port

हाल ही में पटना के निकट बिहटा में बिहार के पहले ड्राई पोर्ट का उद्घाटन किया गया है। यह ड्राई पोर्ट कई महत्वपूर्ण लाभों के साथ राज्य के आर्थिक विकास में सहायक साबित हो सकता है।

ड्राई पोर्ट क्या है?

शुष्क बंदरगाह या अंतर्देशीय कंटेनर डिपो (ICD) एक रसद सुविधा है जो कार्गो हैंडलिंग, भंडारण और परिवहन के लिए बंदरगाह या हवाई अड्डे से दूर स्थित होती है। यह समुद्री या हवाई बंदरगाहों और अंतर्देशीय क्षेत्रों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करता है, जिससे माल की कुशल आवाजाही में सुविधा होती है। वर्तमान में, भारत में लगभग 330 से अधिक ड्राई पोर्ट कार्यशील हैं।



ड्राई पोर्ट के मुख्य लाभ:

- लॉजिस्टिक्स दक्षता:** ड्राई पोर्ट लॉजिस्टिक्स प्रक्रियाओं के अनुकूलन की अनुमति देते हैं, जिससे बंदरगाहों में प्रतीक्षा और कार्गो हैंडलिंग में लगने वाला समय कम हो जाता है, और इस तरह प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार होता है।
- लाभप्रदता:** रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थानों पर स्थापित ड्राई पोर्ट आवश्यक वस्तुओं की सटीक संख्या की गणना और निर्माण में सहायता करते हैं, जिससे समग्र परिवहन लागत को कम किया जा सकता है।
- कार्गो प्रवाह में वृद्धि:** ड्राई पोर्ट की उपस्थिति नए कार्गो प्रवाह को आकर्षित करती है, जिससे आर्थिक प्रभाव में वृद्धि होती है और कंटेनरों के टर्नअराउंड समय में कमी आती है।
- आर्थिक लाभ:** ड्राई पोर्ट रोजगार और आय सृजन में सहायता करते हैं, साथ ही जनसंख्या के लिए विश्वसनीय वस्तु आपूर्ति सुनिश्चित करते हैं।
- बंदरगाह विस्तार:** ये बंदरगाहों के प्रभाव को आस-पास के क्षेत्रों तक विस्तारित करने की अनुमति देते हैं, जिससे परिवहन लिंक के व्यापक नेटवर्क का विकास संभव होता है।
- समय की बचत:** ड्राई पोर्ट से ट्रांसशिपमेंट का समय कम हो जाता है और अंतिम उपभोक्ता तक माल की डिलीवरी तेजी से होती है।

ड्राई पोर्ट के समक्ष चुनौतियाँ:

- अत्यधिक निवेश लागत:** ड्राई पोर्ट की स्थापना के लिए बुनियादी ढाँचे जैसे सड़क, रेलवे, गोदाम, और उपकरणों पर अत्यधिक निवेश की आवश्यकता होती है, जो अक्सर छोटे या नए निवेशकों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- माल प्राप्तकर्ता को क्षति:** माल को बंदरगाह के बजाय टर्मिनल से ले जाने पर माल प्राप्तकर्ता (Consignee) को नुकसान हो सकता है। उन्हें परिवहन की लागत को कवर करने के लिए मजबूर होना पड़ता है, जो कुछ क्षेत्रों में ड्राई पोर्ट के कार्यान्वयन में बाधा बन सकता है।
- कार्गो संबंधी बाधाएँ:** ड्राई पोर्ट पर केवल सीमित प्रकार के कार्गो का भंडारण किया जा सकता है। विशेष उपकरण या वस्तुओं के लिए भंडारण की स्थिति में सीमाएँ हो सकती हैं, जिससे कुछ उत्पादों की आवाजाही प्रभावित हो सकती है।
- संगठन की जटिलता:** ड्राई पोर्ट के प्रबंधन के लिए परिवहन के विभिन्न साधनों, सीमा शुल्क सेवाओं और अन्य संरचनाओं के बीच समन्वय की आवश्यकता होती है। कुशल संचालन सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त प्रयासों की आवश्यकता होती है।

बिहटा ड्राई पोर्ट के बारे में:

बिहटा ड्राई पोर्ट लगभग सात एकड़ में फैला हुआ है और इसे **प्रिस्टीन मगध इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड** और राज्य उद्योग विभाग द्वारा सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मोड पर स्थापित किया गया है। इसे वित्त मंत्रालय के राजस्व विभाग द्वारा अंतर्देशीय कंटेनर डिपो के रूप में मंजूरी दी गई है।

बिहार के लिए ड्राई पोर्ट का महत्व:

- यह बिहार जैसे भू-आबद्ध राज्य के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है, जहाँ निर्यात की वस्तुएँ मुख्य रूप से कृषि-आधारित, वस्त्र, और चमड़े के उत्पादों के रूप में होती हैं, जो विभिन्न स्थानों पर निर्मित होते हैं।
- ड्राई पोर्ट का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह कस्टम क्लीयरेंस प्रक्रियाओं को सरल बनाता है, जिससे बंदरगाहों और हवाई अड्डों पर भीड़भाड़ कम होती है।
- यह बिहार की दीर्घकालिक औद्योगिक आकांक्षाओं को पूरा करने के साथ-साथ राज्य के लॉजिस्टिक्स क्षेत्र को स्थिरता और मजबूती प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।
- बिहटा ड्राई पोर्ट **कोलकाता बंदरगाह, हल्दिया, विशाखापत्तनम, मुंद्रा** और अन्य प्रमुख बंदरगाहों से रेल द्वारा अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। यह राज्य के आयातकों और निर्यातकों के लिए आधुनिक भंडारण सुविधा प्रदान करके एक **वन-स्टॉप समाधान** के रूप में कार्य करेगा।
- बिहार सरकार के आंकड़ों के अनुसार, राज्य ने **2022-23** में **20,000 करोड़ रुपये** का निर्यात दर्ज किया। बिहटा ड्राई पोर्ट की स्थापना से राज्य की निर्यात क्षमता में और वृद्धि होगी।



सड़क सुरक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का उपयोग / Use of Artificial Intelligence (AI) in Road Safety

हाल ही में केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री ने **ट्रैफिक इंफ्रास्ट्रक्चर एक्सपो** के 12वें संस्करण को संबोधित करते हुए सड़क सुरक्षा में सुधार और परिवहन क्षेत्र में उन्नत प्रौद्योगिकियों को अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

सड़क सुरक्षा का वर्तमान परिदृश्य:

- भारत में हर साल लगभग **5 लाख सड़क दुर्घटनाएँ** होती हैं, जिनमें बड़ी संख्या में लोग अपनी जान गंवाते हैं।
- इन दुर्घटनाओं में से **आधे से अधिक लोग 18-36 वर्ष** की आयु वर्ग के होते हैं।
- सड़क दुर्घटनाओं के कारण आर्थिक क्षति का अनुमान **देश के सकल घरेलू उत्पाद का 3%** है।
- इस स्थिति को सुधारने के लिए, सरकार ने तकनीकी समाधान विकसित करने में सहयोग के लिए निजी क्षेत्र के विशेषज्ञों की नियुक्ति करने का निर्णय लिया है।

यह पहल स्टार्टअप्स और उद्योग जगत के नेताओं के प्रस्तावों का मूल्यांकन करेगी, जिससे सर्वोत्तम विचारों का क्रियान्वयन किया जा सके। समिति को तीन महीने के भीतर अपने मूल्यांकन को अंतिम रूप देने का निर्देश दिया गया है।

परिवहन क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग:

1. यातायात प्रबंधन:

- AI प्रणालियाँ वास्तविक समय के यातायात डेटा का विश्लेषण करती हैं, जिससे सिग्नल समय को अनुकूलित किया जा सकता है।
- यह भीड़भाड़ को कम करने और समग्र यातायात प्रवाह में सुधार करने में मदद करती हैं, जिससे जाम या अप्रत्याशित यातायात पैटर्न के कारण होने वाली दुर्घटनाओं में कमी आ सकती है।

2. पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण:

- ऐतिहासिक दुर्घटना डेटा का विश्लेषण करके, AI उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों और समय की पहचान कर सकता है।
- इससे अधिकारियों को लक्षित सुरक्षा उपायों को लागू करने में मदद मिलती है।

3. **चालक सहायता प्रणालियाँ:** AI को वाहन प्रणालियों में एकीकृत किया गया है, जिससे लेन प्रस्थान चेतावनी, टक्कर से बचाव, और अनुकूली क्रूज नियंत्रण जैसी सुविधाएँ प्रदान की जा सकती हैं।

4. आपातकालीन प्रतिक्रिया:

- AI प्रणालियाँ आपातकालीन वाहनों के लिए मार्गों को अनुकूलित कर सकती हैं, जिससे दुर्घटनाओं के दौरान त्वरित प्रतिक्रिया समय सुनिश्चित हो सकता है।
- यह जीवन बचाने के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है।

5. **यातायात उल्लंघनों की पहचान:** AI के माध्यम से यातायात उल्लंघनों की पहचान करने से प्राथिकरण सही ढंग से दंड लागू कर सकेगा, जिससे सड़क सुरक्षा में सुधार होगा।

6. **टोल संग्रहण विधियाँ:** उपग्रह टोल प्रणालियों की खोज सहित टोल संग्रहण विधियों को उन्नत करने से टोल संग्रहण में दक्षता में सुधार होगा और पारदर्शिता सुनिश्चित होगी।



सड़क सुरक्षा में AI के उपयोग की चुनौतियाँ:

1. **बुनियादी ढांचे की कमी:** इंटरनेट और सेंसर नेटवर्क का अभाव।
2. **गोपनीयता चिंताएँ:** डेटा संग्रह से निजता संबंधी मुद्दे।
3. **डाटा गुणवत्ता:** असंगत डेटा से AI सिस्टम में कठिनाई।
4. **एकीकरण जटिलता:** मौजूदा प्रणालियों में AI का समावेश।
5. **कौशल की कमी:** AI विशेषज्ञों का अभाव।
6. **नैतिक प्रश्न:** जिम्मेदारी तय करना मुश्किल।

समाधान और रणनीतियाँ:

1. **डेटा मानकीकरण:** डेटा संग्रह प्रोटोकॉल बनाना।
2. **सार्वजनिक-निजी भागीदारी:** सरकार, निजी और शैक्षणिक संस्थानों का सहयोग।
3. **कौशल विकास:** AI और डेटा एनालिटिक्स प्रशिक्षण।
4. **पायलट परियोजनाएँ:** चुने हुए क्षेत्रों में परीक्षण।
5. **नैतिक दिशानिर्देश:** जवाबदेही और पारदर्शिता



अल्जाइमर रोग के उपचार के लिए नवीन अणुओं का विकास / Development of novel molecules for the treatment of Alzheimer's disease

वैज्ञानिकों ने **अल्जाइमर रोग (एडी)** के उपचार के लिए एक नई दिशा में कदम बढ़ाया है, जिसमें **सिंथेटिक, कम्प्यूटेशनल, और इन-विट्रो** अध्ययनों का मिश्रण उपयोग किया गया है। इस प्रयास के तहत, नए, गैर-विषाक्त अणुओं को विकसित और संश्लेषित किया गया है जो इस रोग के उपचार में प्रभावी सिद्ध हो सकते हैं।

अल्जाइमर रोग का प्रभाव:

- अल्जाइमर रोग डिमेंशिया का सबसे सामान्य प्रकार है, जो सभी डिमेंशिया मामलों का लगभग 75% है।
- विश्वभर में लगभग **55 मिलियन लोग डिमेंशिया** से प्रभावित हैं, जिनमें से **60% से 70%** को अल्जाइमर होने की आशंका है।
- यह रोग मुख्यतः 65 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को प्रभावित करता है और इसके कारणों में उम्र से संबंधित मस्तिष्क परिवर्तन, आनुवंशिक, पर्यावरणीय, और जीवनशैली कारक शामिल हैं।

वर्तमान उपचार विकल्प:

- वर्तमान में, अल्जाइमर रोग के लिए उपचार के विकल्प सीमित हैं, जैसे कि **एन- मिथाइल-डी-एस्पार्टेट रिसेप्टर प्रतिपक्षी (मेमेंटाइन) और तीन एंटी-कोलिनेस्टरेज दवाएँ (डोनेपेज़िल, रिवास्टिग्माइन, गैलेंटामाइन)।**
- हालांकि, स्वीकृत एंटी-कोलिनेस्टरेज दवाओं के लाभ अल्पकालिक होते हैं और गंभीर दुष्प्रभावों के कारण उनके उपयोग में सीमाएँ हैं।

नए अणुओं का विकास:

पुणे के अग्रकर शोध संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. प्रसाद कुलकर्णी और डॉ. विनोद उगले ने नए अणुओं के लिए एक तेज एक-पॉट, तीन-घटक प्रतिक्रिया विकसित की है। इस प्रक्रिया में:

- **उच्च सिंथेटिक पैदावार:** नए अणुओं का उत्पादन किया गया है।
- **इन-विट्रो स्क्रीनिंग:** इन अणुओं की शक्ति और साइटोटॉक्सिसिटी का मूल्यांकन किया गया है।
- विकसित अणुओं को कोलिनेस्टरेज एंजाइमों के खिलाफ प्रभावी पाया गया, विशेष रूप से एसटाइलकोलिनेस्टरेज के लिए, जिसमें ब्यूटिरिलकोलिनेस्टरेज की तुलना में उच्च चयनात्मकता अनुपात था।



अणुओं की विशेषताएँ:

- **गैर-विषाक्तता:** विकसित अणु सुरक्षित और प्रभावी पाए गए।
- **आणविक गतिशीलता सिमुलेशन:** प्रभावी अणुओं ने एंजाइम पॉकेट में अच्छी स्थिरता दिखाई।
- **डुअल कोलिनेस्टरेज अवरोधक:** इन अणुओं को भविष्य में अधिक प्रभावी एंटी-एडी लिगैंड विकसित करने के लिए अनुकूलित किया जा सकता है।

निष्कर्ष: इन अणुओं का उपयोग अन्य दवाओं के संयोजन में अल्जाइमर रोग के उपचार के लिए किया जा सकता है, जिससे दोहरी एंटी-कोलिनेस्टरेज दवाओं को तैयार करने की संभावनाएँ खुलती हैं। आगे के शोध में नए प्रतिस्थापित कार्बाजोल और क्रोमीन क्लब्ड एनालॉग का संश्लेषण करने की योजना है, जो अल्जाइमर रोग के उपचार के लिए और अधिक प्रभावी विकल्प प्रदान कर सकते हैं।

अल्जाइमर रोग

परिचय: अल्जाइमर रोग एक प्रगतिशील न्यूरोडिजनरेटिव विकार है, जो मस्तिष्क को प्रभावित करता है। इसके कारण कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, जैसे:

- स्मृति हानि
- संज्ञानात्मक गिरावट
- व्यवहार में परिवर्तन
- बोलने या लिखने में कठिनाई
- निर्णय लेने की क्षमता में कमी
- मनोदशा और व्यक्तित्व में बदलाव
- समय या स्थान के साथ भ्रम

यह रोग मनोभ्रंश का सबसे सामान्य कारण है, जो मनोभ्रंश के 60-80% मामलों के लिए जिम्मेदार है।

कारण और जोखिम कारक:

अल्जाइमर रोग के कारणों का अभी तक पूर्ण रूप से पता नहीं चल पाया है। हालांकि, इस रोग में योगदान देने वाले कुछ महत्वपूर्ण कारक निम्नलिखित हैं:

1. **आयु:** 65 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों में होने वाले अधिकांश मामलों के साथ बढ़ती उम्र इसका प्राथमिक जोखिम कारक है।
2. **जेनेटिक्स:** कुछ जीन म्यूटेशन, जैसे कि APP, PSEN1 और PSEN2, अल्जाइमर के विकास के जोखिम को बढ़ा सकते हैं।
3. **अमाइलॉइड प्रोटीन:**
 - यह माना जाता है कि अल्जाइमर रोग मस्तिष्क की कोशिकाओं में और उसके आसपास अमाइलॉइड-बीटा तथा टाउ प्रोटीन के असामान्य निर्माण के कारण होता है।
 - अमाइलॉइड-बीटा प्रोटीन तंत्रिका कोशिकाओं के बीच प्लाक बनाने के लिए एक साथ चिपक जाता है, जबकि टाउ प्रोटीन न्यूरोन्स के अंदर मुड़ी हुई गाँठें बनाता है।



पृथ्वी को ठंडा करने के लिए हीरे के चूर्ण का छिड़काव / Sprinkling diamond powder to cool the Earth

हालिया अध्ययन में सुझाव दिया गया है कि वैश्विक तापमान को कम करने और ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के लिए पृथ्वी के ऊपरी वायुमंडल में प्रतिवर्ष लाखों टन हीरे का चूर्ण छिड़का जाना चाहिए।

जियोइंजीनियरिंग की परिभाषा: जियोइंजीनियरिंग का मतलब है वैश्विक तापमान वृद्धि को कम करने के लिए पृथ्वी की जलवायु में बड़े पैमाने पर परिवर्तन करना। इसके दो मुख्य प्रकार हैं:

1. **सौर विकिरण प्रबंधन (SRM):** यह सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी से दूर परावर्तित करता है।
2. **कार्बन डाइऑक्साइड निष्कासन (CDR):** यह वायुमंडल से CO₂ को हटाने की प्रक्रिया है।

वर्तमान भू-इंजीनियरिंग प्रयास:

- **सौर विकिरण प्रबंधन (SRM):** यह प्रयास ज्वालामुखी विस्फोटों से प्रेरित हैं, जैसे कि 1991 में माउंट पिनातुबो के विस्फोट से निकलने वाले सल्फर डाइऑक्साइड से होने वाले प्रभावों की नकल करना।
- अध्ययन में पाया गया है कि हीरे का चूर्ण एसआरएम में अन्य सामग्रियों की तुलना में अधिक प्रभावी हो सकता है।
- तापमान को 1.6°C तक कम करने के लिए प्रतिवर्ष लगभग 5 मिलियन टन हीरे का छिड़काव करना आवश्यक होगा।

अन्य जियोइंजीनियरिंग तकनीकें:

1. **कार्बन कैप्चर और स्टोरेज (CCS):** यह तकनीक CO₂ को स्रोत पर कैप्चर कर भूमिगत रूप से संग्रहीत करती है।
2. **प्रत्यक्ष वायु संग्रहण (DAC):** यह "कृत्रिम पेड़" तकनीक है, जो परिवेशी वायु से CO₂ को निकालकर उसे संग्रहीत या उपयोग करती है।
3. **महासागर निषेचन:** महासागरीय खाद्य उत्पादन बढ़ाने और वायुमंडल से CO₂ को हटाने के लिए महासागरों में पोषक तत्वों को डालने का कार्य।
4. **स्ट्रेटोस्फेरिक एरोसोल इंजेक्शन (SAI):** यह तकनीक सूर्य की ऊष्मा को परावर्तित करने के लिए समताप मंडल में गैसों को पंप करती है।
5. **समुद्री बादल चमकाना (MCB):** समुद्री नमक या अन्य कणों को समुद्री बादलों में छिड़ककर उन्हें अधिक परावर्तक बनाना।



तात्कालिकता और उत्सर्जन लक्ष्य:

1. **वैश्विक तापमान वृद्धि:**
 - प्रयासों के बावजूद, वैश्विक तापमान पूर्व-औद्योगिक स्तर से **1.2°C** अधिक है।
 - 2023 तक, यह वृद्धि लगभग **1.45°C** तक पहुँचने की संभावना है।
2. **पेरिस समझौते का लक्ष्य:**
 - पेरिस समझौते के अनुसार, तापमान को **1.5°C** से नीचे सीमित करना आवश्यक है।
 - इसे प्राप्त करने के लिए **2030 तक उत्सर्जन में 43%** की कटौती करनी होगी, जबकि वर्तमान कार्यवाही से केवल **2%** की कटौती ही संभव हो पा रही है।
3. **सीसीएस/सीडीआर की भूमिका:**
 - कार्बन कैप्चर और डायरेक्ट एयर कैप्चर (सीडीआर) जैसी प्रौद्योगिकियाँ 1.5°C या 2°C के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक मानी जाती हैं।
 - इनके बिना, वैश्विक तापमान को नियंत्रित करना और जलवायु परिवर्तन से निपटना अत्यंत कठिन हो जाएगा।

चुनौतियाँ एवं चिंताएँ:

तकनीकी एवं वित्तीय चुनौतियाँ:

1. **उच्च लागत:** सौर विकिरण प्रबंधन (एसआरएम) की तकनीकी और वित्तीय मांगें बहुत अधिक हैं। अनुमानित है कि नवीकरणीय ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता को प्राथमिकता देने की तुलना में कार्बन कैप्चर और स्टोरेज (सीसीएस) का व्यापक रूप से उपयोग करने पर 2050 तक लगभग **30 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर** अधिक खर्च हो सकता है।
2. **संरचनात्मक अवसंरचना:** सीसीएस की सफलता के लिए सुरक्षित और पर्याप्त संख्या में भूमिगत भंडारण स्थलों की आवश्यकता होती है। यदि ये स्थलों की उपलब्धता कम है, तो अकेले सीसीएस पर भारी निर्भरता टिकाऊ नहीं हो सकेगी।

संभावित जोखिम:

1. **जलवायु परिवर्तन के प्रभाव:** एसआरएम तकनीकों के उपयोग से अनजाने में मौसम के पैटर्न में बदलाव आ सकता है, जिससे:
 - वर्षा के वितरण में परिवर्तन हो सकता है।
 - कृषि उत्पादकता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।
 - जैव विविधता को हानि हो सकती है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलित हो सकता है।
2. **विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अस्थिरता:** नए तकनीकी समाधान अपनाने में अनुसंधान एवं विकास की उच्च लागत और समय लग सकता है, जिससे तत्काल प्रभावी समाधान प्रदान करने में देरी हो सकती है।



80 के दशक के रेट्रो बांड 80s Retro Bonds

हाल ही में, संप्रभु ऋण चूक की बढ़ती घटनाओं ने **राज्य आकस्मिक ऋण उपकरण (Sovereign Contingent Debt Instruments, SCDIs)** में रुचि को पुनर्जीवित किया है। ये जटिल वित्तीय उपकरण 1980 के दशक में लैटिन अमेरिकी ऋण संकट के दौरान विकसित किए गए थे।

राज्य आकस्मिक ऋण उपकरण (SCDI) के बारे में:

- **परिभाषा:** SCDIs सरकारी द्वारा जारी किए गए वित्तीय उपकरण हैं, जिनके पुनर्भुगतान के दायित्व विशेष आर्थिक स्थितियों या प्रदर्शन से जुड़े होते हैं।
- **उद्देश्य:** इनका मुख्य उद्देश्य बांड भुगतान को देश के आर्थिक या राजकोषीय प्रदर्शन से जोड़कर ऋण पुनर्गठन की प्रक्रिया को तेज करना है।
- **विशेषताएँ:** SCDIs में सामान्यतः **जीडीपी** जैसे आर्थिक विकास मेट्रिक्स शामिल होते हैं, और इन्हें विभिन्न राजस्व धाराओं से भी जोड़ा जा सकता है।
- **उदाहरण:** यूक्रेन और श्रीलंका जैसे देशों ने इनका उपयोग चुनौतीपूर्ण ऋण वार्ताओं को संचालित करने के लिए किया है, जिससे निवेशकों को संभावित रिटर्न का आश्वासन मिला है।

SCDI के लाभ:

1. **संकट प्रबंधन:**
 - आर्थिक संकट के दौरान यह बफर प्रदान करता है, जिससे तत्काल राजकोषीय दबाव कम होता है।
 - यह नकदी की कमी से जूझ रहे देशों और बांडधारकों के बीच सुगम बातचीत की सुविधा प्रदान कर सकता है।
2. **विकास को प्रोत्साहन:** सरकारों का आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में स्वार्थ होने के कारण यह बेहतर आर्थिक प्रदर्शन को प्रोत्साहित करता है।
3. **निवेशक अपील:** पारंपरिक सॉवरेन बॉन्ड के मुकाबले, जो निश्चित ब्याज भुगतान प्रदान करते हैं, SCDIs उच्च रिटर्न देने की क्षमता रखते हैं यदि देश की अर्थव्यवस्था अपेक्षाओं से बेहतर प्रदर्शन करती है।

चुनौतियाँ एवं चिंताएँ:

1. **उच्चतर उधार लागत:** SCDIs पर निर्भरता भविष्य में उधार लागत को बढ़ा सकती है, क्योंकि कुछ निवेशक अनिश्चित भुगतान संरचना वाले बांड खरीदने में संकोच कर सकते हैं।
2. **उच्च प्रीमियम: बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स** की 2022 की रिपोर्ट में पाया गया है कि सरकारों को अक्सर इन उपकरणों पर उच्च प्रीमियम का सामना करना पड़ता है, जो सामान्य तरलता और डिफॉल्ट प्रीमियम से **4.24% से 12.5%** अधिक होता है।



ASW SWC 'अभय' का लोकार्पण Inauguration of ASW SWC 'Abhay'

भारतीय नौसेना के लिए मेसर्स जीआरएसई द्वारा निर्मित एंटी-सबमरीन वारफेयर शैलो वाटर क्राफ्ट (ASW SWC) का सातवां जहाज 'अभय' मेसर्स एलएंडटी, कट्टुपल्ली में लोकार्पित किया गया।



परियोजना का विवरण:

- **अनुबंध:** रक्षा मंत्रालय और गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (जीआरएसई), कोलकाता के बीच अप्रैल 2019 में आठ ASW SWC जहाजों के निर्माण के लिए अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- **उद्देश्य:** अर्नाला श्रेणी के ये जहाज भारतीय नौसेना के सेवा में तैनात अभय श्रेणी के एसडब्ल्यू कॉर्वेट की जगह लेंगे। ये जहाज तटीय जल में पनडुब्बी रोधी अभियान, कम तीव्रता वाले समुद्री अभियान (एलआईएमओ) और माइन लेइंग ऑपरेशन के लिए तैयार किए गए हैं।

तकनीकी विशेषताएँ:

- **लंबाई:** लगभग 77 मीटर
- **अधिकतम गति:** 25 नॉट
- **सहनशक्ति:** 1800 नॉटिकल मील (एनएम)

आत्मनिर्भरता का प्रतीक:

- 'अभय' का लोकार्पण भारत की आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
- ASW SWC जहाजों को 80 प्रतिशत से अधिक स्वदेशी सामग्री के साथ बनाया गया है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि बड़े पैमाने पर रक्षा उत्पादन भारतीय विनिर्माण इकाइयों द्वारा किया जाता है।
- यह न केवल देश की सुरक्षा को मजबूत करता है, बल्कि रोजगार और क्षमता में भी वृद्धि करता है।

निष्कर्ष: 'अभय' का लोकार्पण भारतीय नौसेना की सामरिक क्षमताओं को बढ़ाने के साथ-साथ स्वदेशी निर्माण को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण कदम है। यह समारोह देश के रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के प्रति संकल्प को दर्शाता है और भारतीय उद्योगों के लिए नए अवसरों का द्वार खोलता है।

7वां भारत-जर्मनी अंतर-सरकारी परामर्श (IGC)

7th India-Germany Inter-Governmental Consultations (IGC)

हाल ही में, भारत और जर्मनी के बीच सातवां अंतर-सरकारी परामर्श (IGC) संपन्न हुआ, जिसकी सह-अध्यक्षता भारत के प्रधान मंत्री और जर्मनी के संघीय चांसलर द्वारा की गई। इस सम्मेलन का आदर्श वाक्य "नवाचार, गतिशीलता और स्थिरता के साथ एक साथ बढ़ना" था।



IGC के परिणाम:

- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार:** IGC में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार की मांग की गई, साथ ही एक निश्चित समय सीमा के भीतर अंतर-सरकारी वार्ता (आईजीएन) में पाठ-आधारित वार्ता का आग्रह किया गया।
- संप्रभुता का सम्मान:** संयुक्त राष्ट्र चार्टर के सिद्धांतों के प्रति सम्मान पर जोर दिया गया और राष्ट्रों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के खिलाफ किसी भी धमकी या बल प्रयोग की निंदा की गई।
- आपराधिक मामलों में कानूनी सहायता:** आपराधिक मामलों में पारस्परिक कानूनी सहायता संधि संपन्न हुई, जिससे सूचना और साक्ष्य का आदान-प्रदान, पारस्परिक क्षमता निर्माण और सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान संभव हो सकेगा।
- वर्गीकृत सूचना का आदान-प्रदान:** वर्गीकृत सूचना के आदान-प्रदान और पारस्परिक संरक्षण पर समझौता संपन्न हुआ, जिससे एक कानूनी ढांचा तैयार हुआ और यह मार्गदर्शन प्रदान किया गया कि वर्गीकृत सूचना को किस प्रकार संभाला, संरक्षित और प्रेषित किया जाना चाहिए।
- क्षेत्रीय परामर्श की स्थापना:** संबंधित विदेश मंत्रालयों के बीच पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका (डब्ल्यूएएनए) पर क्षेत्रीय परामर्श की स्थापना की गई, जो अफ्रीका और पूर्वी एशिया पर दीर्घकालिक वार्ता तंत्र के अतिरिक्त होगा।
- हिंद-प्रशांत क्षेत्र की स्थिरता:** अंतर्राष्ट्रीय कानून के आधार पर एक स्वतंत्र, खुले, समावेशी, शांतिपूर्ण और समृद्ध हिंद-प्रशांत क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की गई।
- प्रवासन एवं गतिशीलता साझेदारी समझौता (MMPA):** दोनों देशों ने प्रवासन एवं गतिशीलता साझेदारी समझौते को पूर्णतः क्रियान्वित करने का संकल्प लिया। यह समझौता लोगों के लिए गतिशीलता और रोजगार के अवसरों में सुधार लाने, अनियमित प्रवासन और मानव तस्करी की समस्या से निपटने के लिए है।

भारत और जर्मनी संबंध:

- भारत और जर्मनी के बीच वर्ष 2000 से 'रणनीतिक साझेदारी' है, जो वर्ष 2011 में IGC के शुभारंभ के साथ और मजबूत हुई है।

सहयोग के क्षेत्र:

- बहुपक्षीय सहयोग:** जी-4 के ढांचे के भीतर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सुधारों पर एक-दूसरे का समर्थन करना।
- आर्थिक संबंध:** 2022-23 में जर्मनी भारत का 12वां सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार था। 2022 में जर्मनी के कुल विदेशी व्यापार में भारत का हिस्सा लगभग 1% था।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY) के तहत ऋण सीमा में वृद्धि

Increase in loan limit under Pradhan Mantri Mudra Yojana

हाल ही में प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY) के अंतर्गत ऋण सीमा को मौजूदा 10 लाख रुपये से बढ़ाकर 20 लाख रुपये कर दिया गया है। यह निर्णय केंद्रीय बजट 2024-25 में वित्त मंत्री द्वारा की गई घोषणा के अनुरूप है। इसका उद्देश्य उभरते उद्यमियों को वित्तपोषित करना और एक मजबूत उद्यमशील पारिस्थितिकी तंत्र उपलब्ध कराना है।

मुख्य परिवर्तन:

- नई 'तरुण प्लस' श्रेणी:** 10 लाख रुपये से अधिक और 20 लाख रुपये तक के ऋण के लिए एक नई श्रेणी 'तरुण प्लस' बनाई गई है।
- पात्रता:** तरुण प्लस के तहत ऋण उन उद्यमियों को उपलब्ध है, जिन्होंने तरुण श्रेणी के तहत पिछले ऋण लिए हैं और उन्हें सफलतापूर्वक चुकाया है।
- गारंटी कवरेज:**
 - सूक्ष्म इकाइयों के लिए ऋण गारंटी निधि (सीजीएफएमयू) के अंतर्गत 20 लाख रुपये तक के ऋण प्रदान किए जाएंगे।
 - यह निधि संस्थाओं या उनकी योजनाओं की सूची को अनुमोदित कर सकती है, जिनके लिए गारंटी कवर उपलब्ध या अनुपलब्ध होगा।
- CGFMU की स्थापना:** CGFMU की स्थापना 2016 में भारत सरकार की पूर्ण स्वामित्व वाली कंपनी नेशनल क्रेडिट गारंटी ट्रस्टी कंपनी लिमिटेड के तहत की गई थी।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (2015 में शुरू) के बारे में:

- उद्देश्य:** 10 लाख रुपये तक का आसान जमानत-मुक्त सूक्ष्म ऋण उपलब्ध कराना।
- पात्रता:** कोई भी भारतीय नागरिक जिसके पास गैर-कॉर्पोरेट, गैर-कृषि आय सृजन गतिविधि जैसे विनिर्माण, प्रसंस्करण, व्यापार या सेवा क्षेत्र के लिए व्यवसाय योजना हो।
- फाइनेंसर:** मुद्रा (माइक्रो यूनिट्स डेवलपमेंट एंड रिफाइनेंस एजेंसी लिमिटेड) बैंकों, गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थानों (एनबीएफसी) और माइक्रो फाइनेंस संस्थानों (एमएफआई) जैसी वित्तीय संस्थाओं को वित्तपोषण प्रदान करती है।

विभिन्न प्रकार के ऋण विकल्प उपलब्ध हैं:

- शिशु:** 50,000 रुपये तक के ऋण को कवर करता है।
- किशोर:** 50,000 से अधिक और 5 लाख रुपये तक के ऋण को कवर करता है।
- तरुण:** 5 लाख से अधिक और 10 लाख रुपये तक के ऋण को कवर करता है।

निष्कर्ष: प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत ऋण सीमा में वृद्धि से उद्यमियों को अधिक वित्तीय सहायता मिलेगी, जिससे वे अपने व्यवसाय को बढ़ा सकेंगे। यह योजना देश की अर्थव्यवस्था में सूक्ष्म और छोटे उद्यमों की भूमिका को मजबूत करने में महत्वपूर्ण साबित होगी।

महामारी निधि परियोजना Pandemic Fund Project

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय ने "महामारी की तैयारी और प्रतिक्रिया के लिए भारत में पशु स्वास्थ्य सुरक्षा को मजबूत बनाने" पर केंद्रित एक नई परियोजना, **महामारी निधि परियोजना**, शुरू की है। इस परियोजना का उद्देश्य पशु स्वास्थ्य खतरों और महामारी के प्रति प्रतिक्रिया देने की क्षमता को बढ़ाना है।

परियोजना की मुख्य विशेषताएँ:

- **वित्त पोषण:** यह परियोजना G20 महामारी कोष द्वारा वित्त पोषित 25 मिलियन डॉलर की पहल है, जिसे इंडोनेशिया की G20 प्रेसीडेंसी (2022) के तहत स्थापित किया गया था।
- **उद्देश्य:** वित्तपोषण निवेश के माध्यम से निम्न और मध्यम आय वाले देशों की पशु स्वास्थ्य खतरों और महामारी का जवाब देने की क्षमता को बढ़ाना।
- **कार्यान्वयन संस्थाएँ:** एशियाई विकास बैंक (ADB), विश्व बैंक, खाद्य और कृषि संगठन (FAO)।



पशु रोग प्रकोप पर ध्यान देने की आवश्यकता:

1. **जूनोटिक रोगों की रोकथाम:** विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा घोषित 6 में से 5 सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थितियाँ पशु मूल की थीं।
2. **सामाजिक-आर्थिक प्रभावों को न्यूनतम करना:** उदाहरण के लिए, सार्स और एचिवियन फ्लू के कारण क्रमशः 50 बिलियन डॉलर और 30 बिलियन डॉलर की वैश्विक आर्थिक हानि होने का अनुमान है।

परियोजना के अंतर्गत प्रमुख हस्तक्षेप:

1. **पशु स्वास्थ्य प्रयोगशालाओं और टीका विनिर्माण सुविधाओं का उन्नयन और विस्तार।**
2. **शीघ्र चेतावनी और निगरानी तंत्र को बढ़ाना:** प्रकोप का पता लगाने और समय पर हस्तक्षेप की सुविधा के लिए।
3. **डेटा प्रबंधन और विश्लेषणात्मक प्रणालियों को उन्नत करना:** बेहतर जोखिम मूल्यांकन के लिए।
4. **पशुधन क्षेत्र के लिए आपदा प्रबंधन ढांचे के माध्यम से संस्थागत क्षमता अंतराल को कम करना:** राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर।

पशु स्वास्थ्य में सुधार के लिए भारत की पहल:

1. **राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम (एनएडीसीपी):** खुरपका और मुंहपका रोग (एफएमडी) और ब्रुसेल्लोसिस को नियंत्रित और उन्मूलन करना।
2. **राष्ट्रीय गोकुल मिशन:** इसका उद्देश्य देशी गोजातीय नस्लों का विकास और संरक्षण कर उनकी उत्पादकता में सुधार करना है।

भारत में जीवित समुद्री शैवाल के आयात के लिए नए New guidelines for import of live seaweed into India

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय ने विदेशों से उच्च गुणवत्ता वाली **समुद्री शैवाल बीज सामग्री** के आयात को सुविधाजनक बनाने के लिए नए दिशानिर्देश अधिसूचित किए हैं। इस पहल का उद्देश्य तटीय गांवों में **समुद्री शैवाल उद्यमों** को बढ़ावा देना, पर्यावरण संरक्षण बनाए रखना और इस क्षेत्र से संबंधित जैव सुरक्षा चिंताओं का समाधान करना है।



समुद्री और जैव विभाग
Department of Marine Fisheries and Dairying

दिशानिर्देशों की आवश्यकता:

- **समुद्री शैवाल की विशेषताएँ:** समुद्री शैवाल विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों, जैसे लवणता के विभिन्न स्तर और तापमान में उतार-चढ़ाव के संपर्क में रहते हैं।
- **जैव सुरक्षा जोखिम:** समुद्री शैवाल विभिन्न बीमारियों, कीटों और रोगाणुओं का आश्रय दे सकते हैं।
- **जैविक कारक:** प्रजनन रणनीतियों और आनुवंशिकी में अंतर के कारण समुद्री शैवाल नए वातावरण में भी स्थायी रह सकते हैं।

दिशानिर्देश:

1. **आयात प्रतिबंध:** यदि समुद्री शैवाल को रोगजनकों का वाहक माना जाता है या वह सीआईटीईएस (CITES) के अंतर्गत सूचीबद्ध है, या आईयूसीएन (IUCN) की संकटग्रस्त सूची में है, तो ऐसे जीवित समुद्री शैवाल के आयात की अनुमति नहीं दी जाएगी। इसे निर्यातक देश के सक्षम प्राधिकारी द्वारा प्रमाणित होना आवश्यक है।
2. **परमिट और मंजूरी:** समुद्री शैवाल की जीवित सामग्री के आयात के लिए भारत सरकार के मत्स्य विभाग से वैध परमिट और भारतीय जल में विदेशी जलीय प्रजातियों के प्रवेश संबंधी राष्ट्रीय समिति से मंजूरी की आवश्यकता होगी।
3. **प्रत्यक्ष बिक्री पर प्रतिबंध:** घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में आयातित समुद्री शैवाल की प्रत्यक्ष बिक्री की अनुमति नहीं दी जाएगी।
4. **बौद्धिक संपदा अधिकार:** निर्यातक और आयातक आयातित सामग्री पर किसी बौद्धिक संपदा या अन्य अधिकार का दावा नहीं करेगा।

समुद्री शैवाल के बारे में:

- **परिभाषा:** समुद्री शैवाल समुद्री पौधों और शैवाल की प्रजातियों का एक सामान्य नाम है जो समुद्र, नदियों, झीलों और अन्य जल निकायों में उगते हैं।
- **उदाहरण:**
 - कप्पाफाइकस अल्वारेज़ी
 - लाल शैवाल गेलिडिएला एसेरोसा
 - ग्रेसिलेरिया एडुलिस

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

ANKIT AVASTHI

Video will be upload soon !



ANKIT AVASTHI

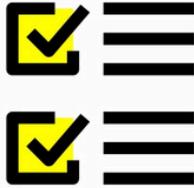


RRB NTPC

TEST SERIES

- ✓ 100+ Mock Test
- ✓ 78 Sectional Test
- ✓ 40+ years PYPs
- ✓ 60+ Current affairs

TEST



Only

99 *Per Year*

Buy Now



GA FOUNDATION

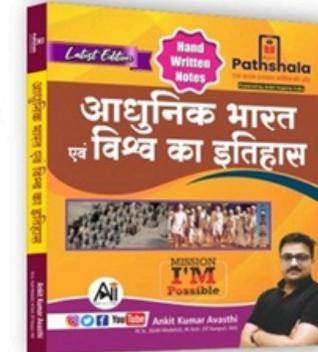
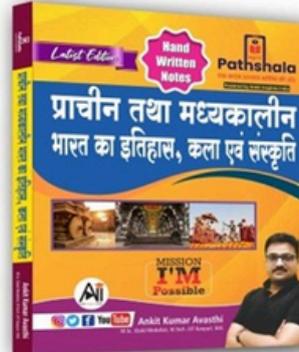
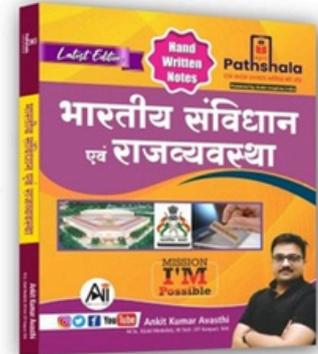
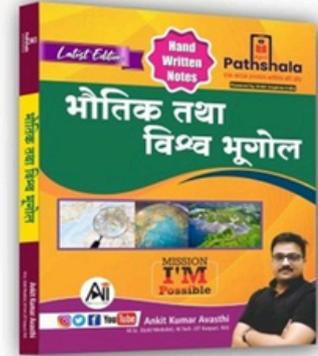
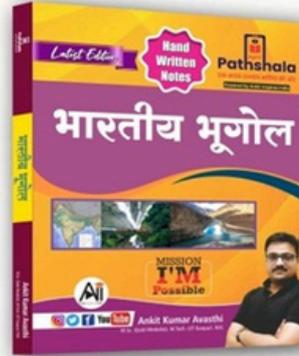
Hand Written
Notes


Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर


Ankit Inspires India

₹ Only
1999

4 पुस्तकों
का
सम्पूर्ण सेट



अधिक जानकारी के लिए दिए
गए नंबर पर संपर्क करें....

 **7878158882**



APNI PATHSHALA

UPPSC, RO/ARO, BPSC, UP

TEST SERIES

UPPSC

(TEST SERIES)

- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

299/-
YEAR

RO/ARO

(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

299/-
YEAR

BPSC

(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

299
YEAR

SSC

(TEST SERIES)

- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

99/-
YEAR

RPF

(TEST SERIES)

- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

99/-
YEAR



Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

NCERT COMPLETE

FOUNDATION BATCH

▶ POLITY ▶ ECONOMICS
▶ HISTORY ▶ GEOGRAPHY

FOR ALL

LIVE DAILY LIVE CLASSES

WEEKLY TEST

CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)

LIVE DOUBT SESSIONS

DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs

4999/-



Apni Pathshala



7878158882



Apni.Pathshala



kaankit



AnkitAvasthiSir



Avasthiankit

ONLY POLITY



1499
RS

DAILY LIVE CLASSES

-  WEEKLY TEST
-  CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
-  LIVE DOUBT SESSIONS
-  DAILY PRACTISE PROBLEM

Apni Pathshala



7878158882



Apni.Pathshala



kaankit



AnkitAvasthiSir



Avasthiankit

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,
Stenographer (Grades C & D)



Only at

99/- Year

Enroll Now!

